लारेन्स कोलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धान्त
(Lawrence Kohlberg's Theory of Moral Development)

लारेन्स कोलबर्ग (1927-1987) के नैतिक विकास के सिद्धान्त का आधार साक्षात्कार से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करके किया इन्होंने 10 साल से 16 साल के बच्चों का साक्षात्कार लिया। कोलबर्ग के नैतिक विकास के छः चरण है जिन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। इन छः चरणों में से प्रत्येक चरण नैतिक दुविधाओं को सुलझाने में अपने पूर्व चरण से अधिक परिपूर्ण है। कोलबर्ग ने नैतिक विकास के सिद्धान्त को अवस्था का सिद्धान्त भी कहा है। पियाजे की तरह कोलबर्ग ने पाया कि नैतिक विकास कुछ चरणों में होता है। कोलबर्ग ने पाया कि ये चरण सार्वभौमिक होते है। बच्चों के बीस साल तक एक विशेष प्रकार के साक्षात्कार का प्रयोग करने के बाद कोलबर्ग इन निर्णयों पर पहुँचे।

इन साक्षात्कारों में बच्चों को कुछ ऐसी कहानियां सुनाई गई जिनमें कहानियों के पात्र के सामने कई नैतिक उलझने थीं। उनमें से सबसे लोकप्रिय यह है :-

यूरोप में एक महिला विशिष्ट प्रकार के कैंसर से प्रभावित थी। डॉक्टर के अनुसार मात्र एक ही औषध ऐसा था जो उस महिला को कैंसर से छुटकारा दिला सकता था। एक औषध विक्रेता ने इस औषध को स्वयं ही तैयार किया था और उस औषध को उसकी लागत कीमत से दस गुणा अधिक कीमत पर वह बेच रहा था। उस औषध की लागत कीमत 200 डालर थी और वह उसे 2000 डालर पर बेच रहा था। बीमार महिला के पति जिसका नाम हिंज **(Heintz)** था, कई लोगो को कर्ज पर भी मुद्रा देने के लिए सघन सम्पर्क स्थापित किया परंतु उसे मात्र 1000 डालर ही प्राप्त हुए। उन्होंने औषध विक्रेता से पुनः सम्पर्क किया और कहा कि इस औषध के नहीं मिलने पर उसकी पत्नी मर जायेगी इसलिए या तो उसे वह औषधि आधी कीमत पर दे दे या उसकी आधी कीमत बाद में वमूल कर ले।

Kohlberg's Theory of Moral Development

Level - 1 : Pre - Conventional Morality प्राक्रूढ़िगत नैतिकता का स्तर	**Level - 2 : Conventional Morality** रूढ़िगत नैतिकता का स्तर	**Level - 3 : Post Conventional Morality** उत्तररूढ़िगत नैतिकता स्तर
Stage - 1 : Punishment obedience Orientation दंड एवं आज्ञाकारिता उन्मुखता	**Stage - 3 : Good boy : Nice Girl Orientation** उत्तम लड़का - अच्छी लड़की उन्मुखता	**Stage - 5 : Social contact orientation** सामाजिक अनुबंध उन्मुखता
Stage - 2 : Instrumental Relativist Orientation साधनात्मक सापेक्षवादी उन्मुखता	**Stage - 4 : Law & order Orientation** नियम एवं आज्ञा उन्मुखता	**Stage - 6 : Universal ethical Principal orientation** सार्वत्रिक नीतिपरक उन्मुखता

कोलबर्ग के नैतिक चिन्तन की अवस्थाएँ

	अवस्था	चरण	सम्बन्धित चिन्तन
1.	रूढ़ि-पूर्व अवस्था में चिन्तन उम्र 4-10 साल	चरण 1 : चरण 2 :	बहरी सत्ता पर आधारित व्यक्ति केन्द्रित, एक दूसरे का हित साधने पर आधारित नैतिक चिंतन
2.	रूढ़िगत चिन्तन उम्र 10-13 साल	चरण 3 : चरण 4 :	अच्छे आपसी व्यवहार पर आधारित नैतिक चिन्तन समाजिक व्यवस्था बनाए रखने पर आधारित
3.	रूढ़ि के ऊपर उठकर नैतिक चिन्तन	चरण 5 : चरण 6 :	समाजिक अनुबन्ध, उपयोगिता और व्यक्तिगत अधिकारो पर आधारित नैतिक चिन्तन सार्वभौमिक नीति सम्मत सिद्धान्तों पर आधारित नैतिक चिन्तन

औषध विक्रेता ने हिंज की प्रार्थना को ठुकरा दिया। हिंज बहुत ही निराश हो गया और अगली रात औषध-विक्रेता का स्टोर तोड़कर घुस गया और अपनी पत्नी के लिए उस औषध को चुरा लिया। क्या हिंज को ऐसा करना चाहिए था? क्या उनका व्यवहार नैतिक रूप से सही था या गलत और क्यों ?

कोलबर्ग ने विभिन्न अनुक्रियाओं के माध्यम से व्यक्ति के नैतिक विकास की तीन मुख्य अवस्थाओं को बताया और यह अवस्थाओं में प्रत्येक स्तर की दो-दो उप अवस्थाओं का ही वर्णन किया। कोलबर्ग ने यह मत जाहिर किया की इन अवस्थाओं का क्रम निश्चित होता है, परन्तु सभी व्यक्तियों में एक ही उम्र में ये अवस्थाएँ नहीं होती है। व्यक्ति किसी एक अवस्था को छोड़कर या तड़पकर आगे नहीं बढ़ता है। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो नैतिक निर्णय में उच्चतम स्तर पर कभी नहीं पहुँच पाते हैं और कुछ लोग नैतिक निर्णय के अपरिपक्व स्तर पर ही हमेशा पुरस्कार पाने तथा दंड से छुटकारा पाने तक ही अपने ही सीमित कर रखे होते है। उन तीनो स्तरो तथा उनमें सम्मिलित प्रत्येक अवस्था का वर्णन अगली कक्षा में किया जाएगा।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖